ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमे खंडे

बंधणाणुयोगद्दारं

सिद्धे विउद्धसयले अज्झत्थबहित्थबंधणुम्मुक्के।

भत्तीए अह णमिउं पुणो पुणो बंधणं वोच्छं।।१।।

सब पदार्थोंका साक्षात्कार करनेवाले और भीतर तथा बाहरके सब बंधनोंसे मुक्त हुए सिद्धोंको बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करके मैं (ग्रन्थकर्ता) बन्धननामक अनुयोगद्वारका कथन करता हूँ।।१।।

बंधणे त्ति चउव्विहा कम्मविभासा (* ता प्रतौ 'कम्मविभासा' इति पाठः।) -- बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति।।१।।

'बन्धन' इस अनुयोगद्वारमें बन्धनकी क्रमसे चार प्रकारकी विभाषा है -- बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान।।१।।

बंधो बंधणं, तेण बंधो सिद्धो। तदो बंधगाणं गहणं। बध्यत इति कर्मसाधने समाश्रीयमाणे बंधणिज्जस्स गहणं। बध्यते अनेनेति करणसाधने शब्दनिष्पत्तौ सत्यां बन्धविधानोपलब्धिः। तेण बंधणस्स चउव्विहा चेव कमविभासा होदि।

बँधना इसका नाम बन्धन है, इससे बन्धकी सिद्धि होती है। जो बाँधता है वह बन्धन है, इससे बन्धकका ग्रहण होता है। 'जो बाँधा जाता है' इस प्रकार कर्मसाधनका आश्रय करनेपर बन्धन शब्दसे बन्धनीयका ग्रहण होता है। 'जिसके द्वारा बाँधा जाता है' इस प्रकार करणसाधनमें शब्दकी सिद्धि करनेपर उससे बन्धविधानका ग्रहण होता है। इसलिए बन्धनका विशेष व्याख्यान क्रमसे चार प्रकारका ही होता है।

विशेषार्थ -- यहाँ व्युत्पत्तिपूर्वक 'बन्धन'के चार भेद किये हैं -- बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान। कोई किसीसे बँधता है इससे बन्धकी सिद्धि की गयी है। जो बाँधता है वह बन्धक है और जो बँधता है वह बन्धनीय है। इससे बन्धक और बन्धनीयकी सिद्धि की गयी है।

जब कोई वस्तु बँधती है तो वह कितने प्रकारसे बँधती है, इसके द्वारा बन्धविधानकी सिद्धि की गयी है। इस प्रकार बन्धनके चार ही भेद हो सकते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

दव्वस्स दव्वेण दव्व-भावाणं वा जो संजोगो समवाओ वा सो बंधो णाम। बंधस्स दव्व-भावभेदभिण्णस्स जे कत्तारा ते बंधणा णाम। बंधपाओग्गपोग्गलदव्वं बंधणिज्जं णाम। पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभेदभिण्णा बंधवियप्पा बंधविहाणं णाम। एदेसु चउसु बंधणेसु ताव बंधपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

द्रव्यका द्रव्यके साथ तथा द्रव्य और भावका क्रमसे जो संयोग और समवाय होता है वह बन्ध कहलाता है। द्रव्य और भावके भेदसे भिन्न दो प्रकारके बन्धके जो कर्ता हैं वे बन्धक कहलाते हैं। बन्धके योग्य पुद्गल द्रव्य बन्धनीय कहलाता है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए बन्धके भेदोंको बन्धविधान कहते हैं। इन चार प्रकारके बन्धनोंमेंसे सर्वप्रथम बन्धका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं।

जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो -- णामबंधो ट्ठवणबंधो दव्वबंधो भावबंधो चेदि।।२।।

बन्धके चार भेद हैं -- नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध।।२।।

बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि।।३।।

बन्धका नयकी अपेक्षा विचार करनेपर कौन नय किन बन्धोंको स्वीकार करता है?।।३।।

णिक्खेवं काऊण तदट्ठपरूवणं मोत्तूण बंधणयविभासणा किमट्ठं कीरदे? ण एस दोसो, अणवगयणयसरूवस्स भव्वजीवस्स णिक्खेवट्ठपरूवणाए किज्जंतीए अवुत्ततुल्लत्तप्पसंगादो अण्णा(* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ का प्रतिषु 'अण्णोण्णविणासणट्ठं' इति पाठः।)णविणासणट्ठं परूवणा कीरदे। जदि सा तं ण कुणइ तो सा किंफला होज्ज। जदि एवं, तो बंधणयविभासणा चेव पुव्वं किण्ण परूविदा? ण, णिक्खेवे अणुद्दिट्ठे संते तमाधारं काऊण भण्णमाणणयविभासणाणुववत्तीदो। तम्हा णिक्खेवं काऊण पच्छा बंधणयविभासणा कीरदे।

शंका -- निक्षेपका निर्देश करेनके बाद उसका निरूपण करना था, किन्तु वैसा न करके पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किसलिए किया जाता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नयके स्वरूपको समझे विना भव्योंको निक्षेपका कथन करनेपर वह अनुक्तके समान प्राप्त होता है, इसलिए अज्ञानका विनाश करनेके लिए पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किया गया है। यदि वह अज्ञानका विनाश न करे तो उसका और क्या फल हो सकता है?

शंका -- यदि ऐसा है तो पहले बन्धका नयकी अपेक्षा ही विशेष विचार क्यों नहीं किया गया

समाधान -- नहीं, क्योंकि, निक्षेपका कथन किये बिना उसे आधार बनाकर नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान करना नहीं बन सकता, इसलिए निक्षेपका निर्देश करनेके बाद ही बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान किया है।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे।।४।।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब बंधोंको स्वीकार करते हैं।।४।।

णेगम-ववहार-संगहणया सव्वे बंधे इच्छंति; तेसिं विसए चदुण्णमेदेसिं संभवादो। सुद्धसंगहणए चदुण्णमेदेसिं णिक्खेवाणं संभवो णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; असुद्धसंगहमस्सिदूणेदेसिं णिक्खेवाणमुवलंभादो। दव्वट्ठिएसु एदेसु णएसु कधं भावणिक्खेवो लब्भइ? ण, वंजणपज्जायमस्सिदूण भावबंधोवलंभादो।

नैगमनय, व्यवहारनय और संग्रहनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं; क्योंकि, इनके विषयरूपसे ये चारों बन्ध सम्भव हैं। यदि कहा जाय कि शुद्ध संग्रहनयमें ये चारों निक्षेप सम्भव नहीं हैं, सौ ऐसा कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, अशुद्ध संग्रहनयकी अपेक्षा ये सब निक्षेप उसके विषय बन जाते हैं।

शंका -- ये तीनों द्रव्यार्थिक नय हैं, इसलिए इनके विषयरूपसे भावनिक्षेप कैसे प्राप्त हो सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, व्यंजनपर्यायकी अपेक्षा भावबन्ध इनका विषय बन जाता है।

उजुसुदो ट्ठवणबंधं णेच्छदि।।५।।

ऋजुसूत्र नय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता।।५।।

कुदो? तत्थ भावाणं सरिसत्ताभावादो। ण च संकप्पवसेण भावो भावंतरं पडिवज्जदि; एगत्थंभम्मि संकप्पवसेण तिहुवणप्पवेसप्पसंगादो। ण च एवं, तिहुवणभावाणुवलंभादो।

क्योंकि, यह नय पदार्थोंकी सदृशताको स्वीकार नहीं करता। यदि कहा जाय कि संकल्पवश एक पदार्थ दूसरे पदार्थरूप हो जायेगा, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक खम्भेमें संकल्पवश तीन लोकके प्रवेशका प्रसंग प्राप्त होगा। और ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें तीन लोकका सद्‌भाव नहीं पाया जाता।

सद्दणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि।।६।।

शब्दनय नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है।।६।।

कधं णामबंधस्स तत्थ संभवो? ण, णामेण विणा इच्छिदपरूवणाए अणुववत्तीदो।

शंका -- इन दोनों नयोंमें नामबन्ध कैसे सम्भव है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, नामके बिना इच्छित पदार्थका कथन नहीं किया जा सकता; इस अपेक्षा नामबन्धको इन दोनों नयोंके विषय स्वीकार किया है।

जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति से सव्वो णामबंधो णाम।।७।।

जो यह नामबन्ध है वह इस प्रकार है -- एक जीव, एक अजीव, बहुत जीव बहुत अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और बहुत अजीव, बहुत जीव और एक अजीव, तथा बहुत जीव और बहुत अजीव; इनमेंसे जिसका बन्ध यह नाम किया जाता है वह सब नामबन्ध है।।७।।

णामस्स पवुत्ती एदेसु अट्टसु चेव; एदेहिंतो बज्झस्स अण्णस्साणुवलंभादो। एदेसु अट्ठसु पवत्तमाणबंधसद्दो णामबंधो कधं णाम अप्पाणं (* ता प्रतौ 'णामबंधो। कधं णाम अप्पाणं' इति पाठः।) पयासेदि? ण, सुज्ज-मणिचंदादिसु स-परप्पयासस्सुवलंभादो।

नामकी प्रवृत्ति इन आठोंमें ही होती है, क्योंकि, इनके बाहर अन्य पदार्थ नहीं पाया जाता।

शंका -- इन आठमें प्रवृत्त हुआ बन्ध शब्द नामबन्ध होता हुआ अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, सूर्य, मणि और चन्द्र आदिमें स्व और परके प्रकाशनकी योग्यता पायी जाती है। आशय यह है कि जैसे सूर्य आदि स्व-परप्रकाशक होते हैं वैसे नाम शब्द भी स्व-परप्रकाशक है।

जो सो ट्ठवणबंधो णाम सो दुविहो -- सब्भावट्ठवणाबंधो चेव असब्भावट्ठवणाबंधो चेव।।८।।

स्थापनाबन्ध दो प्रकारका है -- सद्‌भावस्थापनाबन्ध और असद्‌भावस्थापनाबन्ध।।८।।

सब्भावासब्भावट्ठवणबंधेहिंतो पुधभूदट्ठवणबंधाभावादो दुविहो चेव ट्ठवणबंधो होदि। को ट्ठवणबंधो णाम? अण्णबंधम्मि अण्णबंधस्स सो एसो त्ति बुद्धीए ट्ठवणा ट्ठवणबंधो णाम। आकृतिमिति सद्‌भावस्थापना, अनाकृतिमिति तद्विपरीता।

सद्‌भावस्थापनाबन्ध और असद्‌भावनास्थापनाबन्धसे जुदा कोई तीसरा स्थापनाबन्ध नहीं पाया जाता, इसलिए स्थापनाबन्ध दो प्रकारका ही होता है।

शंका -- स्थापनाबन्ध किसे कहते हैं?

समाधान -- अन्य बन्धमें अन्य बन्धकी 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे स्थापना करना स्थापनाबन्ध है। आकृतिवाले पदार्थमें सद्‌भावस्थापना होती है और आकृतिरहित पदार्थमें असद्‌भावस्थापना होती है।

जो सो सब्भावासब्भावट्ठवणाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया सब्भाव-असब्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सब्भाव-असब्भावट्ठवणबंधो णाम।।९।।

जो वह सद्‌भावस्थापनाबन्ध और असद्‌भावस्थापनाबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- काष्ठकर्मोंमें, पोतकर्मोंमे, लेप्यकर्मोंमें, लयनकर्मोंमें, शैलकर्मोंमें, गृहकर्मोंमें, भित्तिकर्मोंमें, दन्तकर्मोंमें, भेंडकर्मोंमें; तथा अक्ष या कौड़ी इनको आदि लेकर दूसरे पदार्थ अभेदस्वरूपसे सद्‌भावस्थापना तथा असद्‌भावस्थापनामें 'यह वह बन्ध है' इस रूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब सद्‌भावस्थापनाबन्ध और असद्‌भावस्थापनाबन्ध है।।९।।

सीवणि-खइर-सागकट्ठादिसु चक्कबंध-मुरवबंध-विज्जाहरबंध-णागपाबंध-संसरवासबंधादीणं जहासरूवेण घडियठवणा सब्भावट्ठवणबंधो णाम। अजहासरूवेण एदेसिं बंधाणं तेसु ट्ठवणा असब्भावट्ठवणबंधो णाम। चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहि णिप्फण्णाणि चित्तकम्माणि णाम। वत्थेसु पाण-सालिय-कोसद्दादीहिं जाणि वूणणकिरियाए (* अ प्रतौ '--कोसद्दादीहि जाणि दूणणकिरियाए', का प्रतौ '--कोसट्टादीहि जाणि दूणणकिरियाए', ता प्रतौ '--कोसट्टादीहिं जाणि दूणणकिरियाए' इति पाठः।) णिप्पाइदाणि रूवाणि छिंपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम। लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम। पत्थरकट्टएहि (* अ आ का प्रतिषु 'एत्थरट्टट्टएहि', म प्रतौ 'पत्थरउट्टएहि' इति पाठः।) जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम। तेहि चेव छिण्णसिलासु घडिदरूवाणि सेलकम्माणि णाम। मट्टियपिंडेण पासादेसु (* अ का प्रत्योः 'वट्टइपिंडेण पासादेसु', आ प्रतौ 'वट्टइपासादेसु', ता प्रतौ 'वड्डइपिंडेण पासादेसु' इति पाठः) घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम। तेण चेव कुड्डेसु घडिदरूवाणि भित्तिकम्माणि णाम। दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम।

भेंडेहि घडिदरूवाणि भेंडकम्माणि णाण। एदाणि दसविहकम्माणि देसामासियाणि। तेण पत्तकम्म-भिंगकम्म-तलवत्तकम्म-तालिवत्तकम्म-भुजवत्तकम्म-सीवणकम्म मणिवियाणकम्मादीणि वत्तव्वाणि। एदेसु कम्मेसु जहासरूवेण ट्ठविदबंधो सब्भावट्ठवणबंधो णाम। एदेसिं देसामसियत्तं कधं णव्वदे? उवरि भण्णमाण-एवमादिय-वयणादो। अक्खो णाम पासओ, वराडओ णाम कवड्डओ। एदाणि बे वि वयणाणि असब्भावट्ठवणाए ठविदाणि। कुदो एदं णव्वदे? अक्खेसु वा वराडएसु वा त्ति सत्तमीयंतणिद्देसाभावादो। एदेसु एदे वा अमा एयत्तेण ठवणाए बुद्धीए ठविज्जंति बंधो त्ति सो सव्वो ठवणबंधो णाम। ठवणासद्दो बुद्धिवाचओ त्ति कुदो णव्वदे? धरणी धारणी ट्ठवणा कोट्ठा पदिदा त्ति सुत्तादो (* प्रकृति अनुयोगद्वार सू. ४० (पु. १३) I)

श्रीपर्णी, खैर और साग काष्ठ आदिमें चक्रबन्ध, मुरजबन्ध, विद्याधरबन्ध, नागपाशबन्ध और संसारवासबन्ध आदिकी तदाकार स्थापना करना सद्‌भावस्थापनाबन्ध कहलाता है। चित्रकार रंगविशेषोंसे जो चित्र बनाते हैं वे चित्रकर्म कहलाते हैं। वस्त्रोंमें पाण, सालिय और कोसद्द आदि बुनकरोंके द्वारा बुननेरूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं या छीपा उनपर जो आकार बनाते हैं वे पोतकर्म कहलाते हैं। लेप्यकार लेपन कर जो आकार बनाते हैं वे लेप्यकर्म कहलाते हैं। पत्थरफोड़ा पर्वतोंमें जो आकार घटित करते हैं वे लयनकर्म कहलाते हैं। वे ही छिन्न शिलाओंमें जो आकार घटित करते हैं वे शैलकर्म कहलाते हैं। मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म कहलाते हैं। उसीसे दिवालोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे भित्तिकर्म कहलाते हैं। हाथीके दाँतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दन्तकर्म कहलाते हैं। भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं। ये दसों ही कर्म देशामर्शक हैं। इससे पत्रकर्म, भृंगकर्म, तलवत्त (आभूषण)कर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सोनेका कर्म और मणिविज्ञान कर्म आदिको ग्रहण करना चाहिए। इन कर्मोंमें तदाकाररूपसे बन्धकी स्थापना करना सद्‌भावस्थापनाबन्ध है और अतदाकाररूपसे बन्धकी स्थापना करना असद्‌भावस्थापनाबन्ध है।

शंका -- इनका देशामर्शकपना कैसे जाना जाता है?

समाधान -- सूत्रमें आगे कहे जानेवाले 'एवमादिय' वचनसे जाना जाता है। अक्ष पाँसेका नाम है और वराटक कौड़ीका नाम है। ये दोनों ही वचन असद्‌भावस्थापनाके सूचक हैं।

शंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- सूत्रमें 'अक्खेसु वा वराडएसु वा' इस प्रकार सप्तम्यन्त वचनका निर्देश नहीं किया गया है। इससे जाना जाता है कि ये दोनों वचन असद्‌भावस्थापनाके सूचक हैं।

इनमें या ये 'अमा' अर्थात् अभेदरूपसे, स्थापना अर्थात् बुद्धिमें 'बन्ध' इस प्रकार स्थापित किये जाते हैं, इसलिए यह सब स्थापनाबन्ध कहलाता है।

शंका -- स्थापना शब्द बुद्धिका वाचक है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- 'धरणी, धारणा, स्थापना, कोष्ठा और प्रतिष्ठा ये बुद्धिके नाम हैं' इस सूत्रसे जाना जाता है।

विशेषार्थ -- यहाँ सद्‌भाव और असद्‌भावरूप दोनों प्रकारके स्थापनाबन्धकी चर्चा की गयी है। स्थापना एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें होती है। जिसमें स्थापना की जाती है यदि वह तदाकार होता है तो वह सद्‌भावस्थापना कहलाती है और यदि अतदाकार होती है तो वह असद्‌भावस्थापना कहलाती है। बुद्धिसे 'यह वह ही है' ऐसा एकत्व स्थापित करके स्थापना की जाती है, ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो।।१०।।

द्रव्यबन्ध स्थगित किया जाता है।।१०।।

किमट्ठं थप्पो कीरदि? बहुवण्णणिज्जत्तादो।

शंका -- किसलिए स्थगित किया जाता है?

समाधान -- क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करनेवाले हैं।

जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो -- आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव।।११।।

भावबन्ध दो प्रकारका है -- आगमभावबन्ध और नोआगमभावबन्ध। ।।११।।

एवं दुविहो चेव भावबन्धो होदि; आगम-णोआगमेहिंतो वदिरित्तभावाणुवलंभादो।

इस प्रकार भावबन्ध दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि, आगमभाव और नोआगमभावसे अतिरिक्त अन्य भाव नहीं पाया जाता।

जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं। जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा

परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम।।१२।।

जो आगमभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम। इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा, तथा इनसे लेकर जो अन्य उपयोग हैं उनमें भावरूपसे जितने उपयुक्त भाव हैं वे सब आगमभावबन्ध हैं।।१२।।

ट्ठिदं जिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससममिदि णवविहो आगमो। कधमेगो आगमो णवविहत्तं पडिवज्जदे? लक्खणभेदेण। किं तल्लक्खणं? उच्चदे -- अवधृतमात्रं स्थितं नाम। जेण बारह वि अंगाणि अवहारिदाणि सो साहू ट्ठिदसुदणाणं होदि। कधं तस्स ट्ठिदत्तं? अण्णत्थ संचाराभावादो। तं पि कुदो? परेसिं करणसत्तीए अभावादो। जो अवगयमत्थं सण्णिमसण्णिं चिंतिऊण वोत्तुं समत्थो सो जिदं णाम सुदणाणं। जो अवगयबारहअंगो संतो खलणेण विणा अवगयमत्थं वोत्तुं समत्थो सो परिजिदं णाम सुदणाणं होदि। ण च एदे वि आगमा परपच्चायणक्खमा; दच्छत्ताभावादो। जो अवगयबारहअंगो संतो परेसिं वक्खाणक्खमो सो आगमो वायणोवगदो णाम। का वाचना? शिष्याध्यापनं वाचना। सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणाणं सुत्तसमं। अधवा सुत्तं बारहंगसद्दागमो, आइरियोवदेसेण विणा सुत्तादो चेव जं उप्पज्जदि सुदणाणं तं सुत्तसमं। अत्थो गणहरदेवो, आगमसुत्तेण विणा सयलसुदणाणपज्जाएण परिणदत्तादो। तेण समं सुदणाणं अत्थसमं। अधवा अत्थो बीजपदं, तत्तो उप्पण्णं सयलसुदणाणमत्थसमं। आइरियाणमुवएसो गंथो, तेण समं गंथसमं। बारहअंगसद्दागममाइरियपादमूले सोऊण जं उप्पण्णं सुदणाणं तं गंथसममिदि वुत्तं होदि। आइरियपादमूले बारहंगसद्दागमं सोऊण जस्स अहिलप्पत्थविसयं चेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो णामसमं। बारहंगसद्दागमं सुणेंतस्स जस्स सुदपडिबद्धत्थविसयमेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो घोससमं। एवं णवविहं सुदणाणं परूविदं।

स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; यह नौ प्रकारका आगम है।

शंका -- एक आगमके नौ भेद कैसे हो जाते हैं?

समाधान -- लक्षणके भेदसे एक आगमके नौ भेद हो जाते हैं।

शंका -- वह लक्षण कौनसा है?

समाधान -- कहते हैं, अवधारणमात्रकी स्थित संज्ञा है। जिसने बारह ही अंगोंको अवधारित कर लिया है वह साधु स्थित श्रुतज्ञान है।

शंका -- इसकी स्थित संज्ञा क्यों है?

समाधान -- अन्यत्र इसका संचार नहीं होता, इससे उसकी स्थित संज्ञा है।

शंका -- ऐसा भी क्यों है?

समाधान -- क्योंकि, अन्यके साधकतमरूपसे होनेके करण होनेकी शक्ति नहीं पायी जाती।

जो जाने हुए अर्थको धीरे-धीरे विचार कर कहनेके लिए समर्थ होता है वह जित नामका श्रुतज्ञान है। जो बारह अंगोंको जानकर बिना स्खलनके जाने हुए अर्थको कहनेके लिए समर्थ होता है वह परिजित नामका श्रुतज्ञान है। ये दोनों ही आगम अन्यको ज्ञान करानेमें समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, इनमें दक्षता नहीं पायी जाती। जो बारह अंगोंको जानकर अन्यके लिए उनका व्याख्यान करनेमें समर्थ है वह वाचनोपगत नामका आगम है।

शंका -- वाचना किसे कहते हैं?

समाधान -- शिष्योंको पढ़ाना इसका नाम वाचना है।

सूत्रका अर्थ श्रुतकेवली है। उसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अथवा, सूत्रका अर्थ बारह प्रकारका अंगरूप श्रुतागम है। आचार्यके उपदेशके विना सूत्रसे ही जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अर्थ गणधरदेवका नाम है, क्योंकि, वे आगमसूत्रके बिना सकल श्रुतज्ञानरूप पर्यायसे परिणत रहते हैं, इनके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है। अथवा अर्थ बीजपदको कहते हैं, इससे जो समस्त श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्योंके उपदेशको ग्रन्थ कहते हैं, इसके समान जो श्रुत ज्ञान होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जिसके कथन करनेयोग्य अर्थको विषय करनेवाला ही श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह नामसम श्रुतज्ञान है। बारह अंगरूप शब्दागमको सुननेवाले जिसके सुने हुए अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थको विषय करनेवाला श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह घोषसम श्रुतज्ञान है। इस प्रकार नौ प्रकारके श्रुतज्ञानका कथन किया।

संपहि एत्थ उवओगो वायणा-पुच्छण-पडिच्छण-परियट्टण-अणुपेहण-त्थय-थुदि-धम्मकहाभेएण अट्ठविहो। तत्थ परेसिं वक्खाणं वायणा णाम। तत्थ अणिच्छिदट्ठाणं पण्णवावारो पुच्छणं णाम। आइरिएहि कहिज्जमाणत्थाणं सुणणं पडिच्छणं णाम। अवगयत्थस्स हियएण पुणो पुणो परिमलणं परियट्टणं णाम। सुत्तत्थस्स सुदाणुसारेण चिंतणमणुपेहणं णाम। सव्वसुदणाणविसओ उवजोगो थवो णाम। एगंगविसओ (* अ आ का प्रतिषु 'एवंगयविसओ', ता प्रतौ 'एयंगयविसओ' इति पाठः।) एयपुव्वविसओ वा उवजोगो थुदी णाम। वत्थु-अणुयोगादिविसओ भावो धम्मकहा णाम। एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्ट जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम।

इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथाके भेदसे आठ प्रकारका उपयोग होता है। उनमेंसे अन्यके लिए व्याख्यान करना वाचना है। उसमें अनिश्चित अर्थको समझनेके लिए प्रश्न करना पृच्छना है। आचार्य जिन अर्थोंका कथन कर रहे हों उनका सुनना प्रतीच्छना है। जाने हुए अर्थका हृदयसे पुनः पुनः विचार करना परिवर्तना है। सूत्रके अर्थका श्रुतके अनुसार चिन्तन करना अनुप्रेक्षणा है। समस्त श्रुतज्ञानको विषय करनेवाला उपयोग स्तव कहलाता है। एक अंग या एक पूर्वको विषय करनेवाला उपयोग स्तुति कहलाता है। तथा वस्तु और अनुयोगद्वार आदिको विषय करनेवाला उपयोग धर्मकथा कहलाता है। इत्यादि जितने उपयोग हैं उनमें 'यह भाव है' ऐसा समझकर जितने उपयुक्त भाव होते हैं वह सब आगम भावबन्ध है।

जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो -- जीवभावबंधो चेव अजीवभावबंधो चेव।।१३।।

नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है -- जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध।।१३।।

एवं दुविहो चेव णोआगमभावबंधो होदि; जीवाजीववदिरित्तणोआगमभावबंधाभावादो।

इस तरह दो प्रकारका ही नोआगमभावबन्ध है, क्योंकि, जीव और अजीव इन दो भेदोंके सिवा नोआगमभाव नहीं पाया जाता।

जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो -- विवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो चेव।।१४।।

जीवभावबन्ध तीन प्रकारका है -- विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध।।१४।।

एवं तिविहो चेव जीवभावबंधो होदि, अण्णस्स चउत्थस्स जीवभावस्स अणुवलंभादो। कम्माणमुदओ उदीरणा वा विवागो णाम, विवागो पच्चओ कारणं जस्स भावस्स सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम। कम्माणमुदय-उदीरणाणमभावो अविवागो णाम। कम्माणमुवसमो खओ वा अविवागो त्ति भणिदं होदि। अविवाो पच्चयो कारणं जस्स भावस्स सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम। कम्माणमुदय-उदीरणाहिंतो तदुवसमेण च जो उप्पज्जइ भावो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

इस प्रकार तीन प्रकारका ही जीवभावबन्ध है, क्योंकि, अन्य चौथा जीवभाव नहीं पाया जाता। कर्मोंके उदय और उदीरणाको विपाक कहते हैं और विपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणाके अभावको अविपाक कहते हैं। कर्मोंके उपशम और क्षयको अविपाक कहते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अविपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणासे तथा इनके उपशमसे जो भाव उत्पन्न होता है उसे तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं।

जो सो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- देवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदेत्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेसे त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।।१५।।

जो विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यंचभाव, नारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, क्रोधवेद, मानवेद, मायावेद, लोभवेद, रागवेद, द्वेषवेद, मोहवेद, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, असंयतभाव, अविरतभाव, अज्ञानभाव और मिथ्यादृष्टिभाव; तथा इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकसे उत्पन्न हुए और जितने भाव हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं।।१५।।

देवगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणं णीदो देवभावो होदि। मणुसगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणवदिरित्तो मणुस्से त्ति भावो होदि। तिरिक्खगदिणामकम्मोदएण तिरिक्खे त्ति भावो। णिरयगइणामकम्मोदएण णेरइए त्ति भावो। इत्थिकम्मोदएण इत्थिवेदो त्ति भावो होदि। पुरिसवेदभावो विवागपच्चइयो; पुरिसवेदोदयजणिदत्तादो। णवुंसयवेदभावो विवागपच्चइयो; णवुंसयवेदकम्मोदयजणिदत्तादो। कोध-माण-माया-लोभभावा विवागपच्चइया; कोध-माण-माया-लोभकम्मविवागजणिदत्तादो। रागो विवागपच्चइयो' माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। दोसो विवागपच्चइयो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। पंचविहमिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं च मोहो, सो विवागपच्चइयो; मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। किण्ण-णील-काउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ विवागपच्चइयाओ अघादिकम्माणं तप्पाओग्गदव्वकम्मोदएण कसाओदएण च छलेस्साणिप्पत्तीदो। असंजदत्तं विवागपच्चइयं; संजमघादिकम्माणमुदएण समुप्पण्णत्तादो। अविरदत्तं विवागपच्चइयं देस-सयलविरइघाइकम्मोदयजणिदत्तादो। संजम-विरईणं को भेदो? ससमिदिमहव्वयाणुव्वयाइं संजमो। समिईहि विणा महव्वयाणुव्वया विरई। अण्णाणं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो णाणावरणकम्मोदयजणिदत्तादो वा। मिच्छत्तं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो। जे च अमी अण्णे च एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

देवगति नामकर्मके उदयसे जो अणिमा आदि गुणोंको प्राप्त करता है वह देवभाव है। मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे अणिमा आदि गुणोंसे रहित मनुष्यभाव होता है। तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे तिर्यंचभाव होता है। नरकगति नामकर्मके उदयसे नारकभाव होता है। स्त्रीवेद कर्मके उदयसे स्त्रीवेदरूप भाव होता है। पुरुषवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह पुरुषवेदके उदयसे उत्पन्न होता है। नपुंसकवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह नपुंसकवेद कर्मके उदयसे उत्पन्न होता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये भाव भी विपाकप्रत्ययिक होते हैं; क्योंकि, ये भाव क्रोध, मान, माया और लोभरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे उत्पन्न होते हैं। राग भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे होती है। दोष भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मके विपाकसे होती है। पाँच प्रकारका मिथ्यात्व,

सम्यग्मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व मोह कहलाता है। वह भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीरूप द्रव्यकर्मके उदयसे होती है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओंकी उत्पत्ति अघाति कर्मोंमेंसे तत्प्रायोग्य द्रव्यकर्मके उदयसे और कषायके उदयसे होती है। असंयतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, वह संयमका घात करनेवाले कर्मोंके उत्पन्न होता है। अविरतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह देशविरति और सकलविरतिके घातक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है।

शंका -- संयम और विरतिमें क्या भेद है?

समाधान -- समितियोंके साथ महाव्रत और अणुव्रत संयम कहलाते हैं और समितियोंके विना महाव्रत और अणुव्रत विरति कहलाते हैं। यही इन दोनोंमें भेद है।

अज्ञानभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे अथवा ञ ाानावरणके उदयसे उत्पन्न होता है। इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयपाकनिष्पन्न और जितने भाव होते हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहलाते हैं।

विशेषार्थ -- प्रकृतमें प्रत्यय शब्द निमित्तवाची है। यहाँ देवभाव, मनुष्यभाव आदि जितने भाव गिनाये हैं वे सब विवक्षित कर्मके उदय और उदीरणाके निमित्तसे होते हैं, इसलिए उन्हें विपाकप्रत्ययिक जीवबन्धभाव कहा है। यहाँ ये कुल चौबीस भाव गिनाये हैं, जबकि तत्त्वार्थसूत्रमें कुल इक्कीस भाव ही गिनाये हैं। तत्त्वार्थसूत्रमें गिनाये गये भावोंमेंसे असिद्धत्व भाव यहाँ नहीं गिनाया है और यहाँ राग, दोष, मोह और अविरति ये चार भाव अतिरिक्त गिनाये हैं। इनमेंसे यद्यपि अविरति भावका सामान्यतः असंयम भावमें अन्तर्भाव किया जा सकता है, पर शेष तीन भावोंके गिनानेमें विशिष्ट दृष्टिकोणकी प्रतीति होती है। नौकषायोंके नौ भेद हैं, उनमेसे रति आदिके उदयसे होनेवाले भावोंका तत्त्वार्थसूत्रमें दर्शन नहीं होता, जबकि यहाँ इन भावोंका राग और दोषमें अन्तर्भाव होता है। इसी प्रकार सासादनभाव और सम्यग्मिथ्यात्वभावकी परिगणना भी तत्त्वार्थसूत्रमें नहीं की गयी है जबकि यहाँ इनका अन्तर्भाव मोहमें हो जाता है। एक बात अवश्य है कि यहाँ असिद्धत्व भाव नहीं गिनाया है, पर इसके साथ यहाँ इसी प्रकार और दूसरे भावोंके ग्रहण करनेकी सूचना अवश्य की है। इसलिए कोई हानि नहीं है। आशय यह है कि यहाँ औदयिक भावोंका विचार करते समय उस दृष्टिकोणको अपनाया गया है जिससे प्रायः सभी भावोंका ग्रहण हो जाता है।

जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो -- उवसमियो अविवागपच्चियो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव।।१६।।

अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध दो प्रकारका है -- औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध।।१६।।

एवं दुविहो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो होदि। जीव-भव्वाभव्वत्तादिजीवभावा पारिणामिया वि अत्थि, ते एत्थ किण्ण परूविदा? वुच्चदे -- आउआदिपाणाणं धारणं जीवणं णाम। तं च अजोगिचरिमसमयादो उवरि णत्थि, सिद्धेसु पाणणिबंधणट्ठकम्माभावादो। तम्हा सिद्धा ण जीवा जीविदपुव्वा इदि। सिद्धाणं पि जीवत्तं किण्ण इच्छिज्जदे? ण, उवयारस्स सच्चत्ताभावादो। सिद्धेसु पाणाभावण्णहाणुववत्तीदो जीवत्तं ण पारिणामियं, किंतु कम्मविवागजं; यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात्। तत्तो जीवभावो ओदइओ त्ति सिद्धं। तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं, किंतु चेदणगुणमवलंबिय तत्थ परूवणा कदा। तेण तं पि ण विरुज्झदे।

इस तरह दो प्रकारका ही अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध होता है।

शंका -- जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व आदिक जीवभाव पारिणामिक भी हैं, उनका यहाँ क्यों कथन नहीं किया?

समाधान -- कहते हैं, आयु आदि प्राणोंका धारण करना जीवन है। वह अयोगीके अन्तिम समयसे आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि, सिद्धोंके प्राणोंके कारणभूत आठों कर्मोंका अभाव है। इसलिए सिद्ध जीव नहीं हैं, अधिकसे अधिक वे जीवितपूर्व कहे जा सकते हैं।

शंका -- सिद्धोंके जीवत्व क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, सिद्धोंमें जीवत्व उपचारसे है, और उपचारको सत्य मानना ठीक नहीं है।

सिद्धोंमें प्राणोंका अभाव मानना अन्यथा बन नहीं सकता, इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है। किन्तु वह कर्मके विपाकसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, 'जो जिसके सद्भाव और असद्भावका अविनाभावी होता है वह उसका है, ऐसा कार्य-कार्यकारणभावके ज्ञाता कहते हैं' ऐसा न्याय है। इसलिए जीवभाव औदयिक है, यह सिद्ध होता है। तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्वको जो पारिणामिक कहा है वह प्राणोंको धारण करनेकी अपेक्षासे नहीं कहा है, किन्तु

चैतन्य गुणकी अपेक्षासे वहाँ वैसा कथन किया है, इसलिए वह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता।

चार अघाति कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ असिद्धभाव है। वह दो प्रकारका है-- अनादिअनन्त और अनादिसान्त। इनमेंसे जिनके असिद्धभाव अनादि-अनन्त है अभव्य जीव हैं और जिनके दूसरे प्रकारका है वे भव्य जीव हैं। इसलिए भव्यत्व और अभव्यत्व ये भी विपाकप्रत्ययिक ही हैं।

शंका -- तत्त्वार्थसूत्रमें इन्हें पारिणामिक कहा है, इसलिए इस कथनका उसके साथ विरोध कैसे नहीं होगा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, असिद्धत्वका अनादि-अनन्तपना और अनादि-सान्तपना निष्कारण है, यह समझकर उन्हें वहाँ पारिणामिक स्वीकार किया गया है।

जो सो ओवसामिओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं, जे चामण्णे एवमादिया उवसामिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।।१७।।

जो औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- उपशान्तक्रोध, उपशान्तमान, उपशान्तमाया, उपशान्तलोभ, उपशान्तदोष, उपशान्तमोह, उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ, औपशमिकसम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र, तथा इनसे लेकर और जितने औपशमिक भाव हैं वह सब औपशमिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।।१७।।

उवसंतकोहे अणियट्टिम्मि जो भावो सो उवसमिओ अविवागपच्चियो जीवभावबंधो; दव्व-भावकोधाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाणे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमाणाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाये जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्वभावमायाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतलोभे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावलोहाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतरागे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेददव्वकम्माणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतदोसे जीवे जो भावो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं

दव्वकम्ममुवसमेण समुब्भूदत्तादो। (उवसंतमोहे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अट्ठावीसमोहणीयपयडीणं दव्वकम्ममुवसमेण समुब्भूदत्तादो) उवसंतकसायवीयरायछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पणुवीसकसायाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो। जमुवसमियं सम्मत्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; तिविहदंसणमोहणीयदव्वकम्मुवसमेण समुप्पत्तीए। जं उवसमियं चारित्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; चारित्तमोहणीयस्स देससव्वुवसमणाए समुब्भूदत्तादो। जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णो वा वि (* प्रतिषु 'अणेया वि' इति पाठः।) अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांपराइय-उवसंतकसाएसु समयं पडि जे उप्पज्जमाणा जीवभावा सो सव्वो उवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम।

अनिवृत्तिकरणमें क्रोधके उपशमसे जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यक्रोध और भावक्रोधके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमान जीवके जो भाव उत्पन्न होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह द्रव्यमान और भावमानके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमाया जीवमें जो भाव उत्पन्न होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह द्रव्यमाया और भावमायाके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तलोभ जीवमें जो भाव उत्पन्न होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह द्रव्यलोभ और भावलोभके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तराग जीवमें जो भाव उत्पन्न होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह माया, लोभ, हास्य,रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तदोष जीवमें जो भाव उत्पन्न होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मोंके उत्पन्न होता है। उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव उत्पन्न होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह पच्चीस कषायरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। जो औपशमिक सम्यक्त्व है वह भी औपशमिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह तीन प्रकारके दर्शनमोहनीय द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है। जो औपशमिक चारित्र है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयकी देशोपशमना और सर्वोपशमनासे उत्पन्न होता है। चूँकि ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी

अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें प्रत्येक समयमें उत्पन्न होनेवाले जो जीवके भाव हैं वह सब औपशमिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति चामण्णे एवमादिया खइया भावा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।।१८।।

जो क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- क्षीणक्रोध, क्षीणमान, क्षीणमाया, क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणदोष, क्षीणमोह, क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिकचारित्र, क्षायिक दानलब्धि, क्षायिक लाभलब्धि, क्षायिक भोगलब्धि, क्षायिक परिभोगलब्धि, क्षायिक वीर्यलब्धि, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत्त, सर्वदुःख-अन्तकृत् इसी प्रकार और भी जो दूसरे क्षायिक भाव होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।।१८।।

खीणकोहे जीवे जो भावो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्वभावकोहाणं णिरवसेसक्खएण समुप्पण्णत्तादो। खीणमाणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावमाणक्खएण समुप्पत्तीदो (* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ का ता प्रतिषु 'समुप्पत्तीए' इति पाठः। एवमग्रेऽपि।) खीणमाए जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहमायक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणलोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहलोहक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणरागे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माय-लोह-हस्स-रदि-तिवेदाणं दुविहकम्मक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणदोसे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दुविहकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणमोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; अट्ठावीसभेदभिण्णमोहक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणकसायवीदरागछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पंचवीसकसायाणं णिस्सेसक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं सम्मत्तं तिं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दंसणमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं चारित्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो

जीवभावबंधो, चारित्तमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जा खइया दाणलद्धी सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दाणंतराइय णिम्मूलक्खएण समुप्पत्तीदो। अरहंता खीणदाणंतराइया अहिप्पाए तदसंभवादो। ण च अण्णम्हि उजुसुदे अण्णस्स उजुसुदस्स संभवो (* आ प्रतौ 'संभवो त्ति' इति पाठः।), भिण्णविसयाणं णयाणमेयविसयत्तविरोहादो।

क्षीणक्रोध जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्य और भाव क्रोधके सर्वथा क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमान जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमाया जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारकी मायाके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणलोभ जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारते लोभके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणराग जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमोह जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह अट्ठाईस प्रकारके मोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविभागप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायोंके निःशेष क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक सम्यक्त्व है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दर्शनमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक चारित्र है, वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह चारित्रमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक दानलब्धि है वह भी अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दानान्तरायके निर्मूल क्षयसे उत्पन्न होती है। वैसा मानना सम्भव नहीं है। (अर्थात् जबकि वेदनाका अर्थ सुख-दुःख है तो वह ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा उदयगत वेदनीयस्कन्ध ही हो सकता है, उदयगत अन्य कर्मस्कन्ध वेदना नही हो सकता।) और अन्य ऋजुसूत्रमें अन्य ऋजुसूत्र सम्भव नहीं है, क्योंकि भिन्न भिन्न विषयोंवाले नयोंका एक विषय माननेमें विरोध आता है। (यही कारण है कि यहाँ ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा वेदना शब्द द्वारा आठ कर्मोंके उदयगत पुद्गलस्कन्ध नहीं ग्रहण किये गये हैं।)

विशेषार्थ -- यहाँ ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा 'वेदना' का क्या अर्थ है, यह बतलाया गया है। सूत्रमें इस नयकी अपेक्षा केवल वेदनीय कर्मको ही वेदना कहा है जिससे ऋजुसूत्र नयका विषय

विचारणीय हो गया है। ऋजुसूत्र पर्यायार्थिक नयका एक भेद है अतः ऐसी शंका होना स्वाभाविक है कि ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य कैसे हो सकता है? इस शंकाका जो समाधान किया गया है उसका भाव यह है कि एक तो व्यंजन पर्यायकी अपेक्षा ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य बन जाता है। दूसरे, उत्पाद और व्ययसे द्रव्य सर्वथा स्वतंत्र पदार्थ नहीं है। इसलिए इस अपेक्षासे द्रव्यको ऋजुसूत्र नयका विषय माननेमें कोई बाधा नहीं आती। शेष कथन सुगम है।

सद्दणयस्स वेयणा चेव वेयणा।।४।।

शब्दनयकी अपेक्षा वेदना ही वेदना है।।४।।

वेयणीयदव्वकम्मोदयजणिदसुह-दुक्खाणि अट्ठकम्माणमुदयजणिदजीवपरिणामो वा वेदणा, ण दव्वं; सद्दणयविसए दव्वाभावादो। एवं वेयणाणामविहाणमिदि समत्तमणुयोगद्दारं।

शब्दनयकी वेदनीय द्रव्य कर्मके उदयसे उत्पन्न हुआ सुख-दुःख अथवा आठ कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ जीवका परिणाम वेदना कहलाता है, द्रव्य नहीं; क्योंकि शब्द नयका विषय द्रव्य नहीं है।

इस प्रकार वेदना नामविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

४

वेयणादव्वविहाणं

वेयणादव्वविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति -- पदमीमांसा सामित्त(* अ प्रतौ 'णामेत्त', आ प्रतौ 'णमेत्त', का प्रतौ 'नामेत्त' इति पाठः।)मप्पाबहुए त्ति।।१।।

अब वेदनाद्रव्यविधानका प्रकरण है। उसमें पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं।।१।।

वेयणा च सा दव्वं च तं वेयणादव्वं, तस्स विहाणं उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णादिपरूवणं; विधीयते अनेनेति व्युत्पत्तेः। तं वेयणादव्वविहाणं। तत्थ इमाणि पदमीमांसादितिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तत्थ पदं दुविहं -- दव्वत्थापदं भेदपदमिदि। तस्स जम्हि अवट्ठाणं तस्स तं पदं, ट्ठाणमिदि वुत्तं होदि। जहा -- सिद्धिखेत्तं सिद्धाणं पदं अत्थालावो (* अ प्रतौ 'अत्थलोवा', आ प्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः । स का प्रत्योः 'अत्थालोवो' इति पाठः।) अत्थावगमस्स पदं। उत्तं च --

वेदना पदका द्रव्य पदके साथ कर्मधारय समास है -- वेदना जो द्रव्य वह वेदनाद्रव्य। इसके विधान अर्थात् भेद उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य आदि अनेक हैं, जिनका इस अधिकारमें कथन किया गया है। विधान शब्दका व्युत्पत्यर्थ है 'विधीयते अनेन' जिसके द्वारा विधान किया जाय। यह 'वेदनाद्रव्यविधान' पदका अर्थ है। इसके ये पदमीमांसा आदि तीन अनुयोगद्वार जानने चाहिए।

पद दो प्रकारका है -- व्यवस्थापद और भेदपद। जिसका जिनमें अवस्थान है वह उसका पद अर्थात् स्थान कहलाता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। जैसे सिद्धिक्षेत्र सिद्धोंका पद है। अर्थालाप अर्थपरिज्ञानका पद है। कहा भी है --

अत्थो पदेण गम्मइ पदमिह अट्ठरहियमणभिलप्पं।

पदमत्थस्स णिमेणं अत्थालावो* पदं कुणई **।।१।।

(** पदमत्थस्स णिमेणं पदमिह अत्थरहियमणहिलप्पं। तम्हा आइरियाणं अत्थालावो पदं कुणई।। जयध. १, पृ. ९१)

अर्थ पदसे जाना जाता है। यहाँ अर्थरहित पद उच्चारणके अयोग्य है। पद अर्थका स्थान है। अतः अर्थोच्चारण पदको उत्पन्न करता है।।१।।

भेदो विसेसो पुधत्तमिदि एयट्ठो। पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते इति पदम्, भेदो चेव पदं भेदपदम्। एत्थ भेदपदेण उक्कस्सादिसरूवेण अहियारो। उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्ण-सादि-अणादि-धुव-अद्धुव-ओज-जुम्म-ओम-विसिट्ठ-णोमणोविसिट्ठपदभेदेण एत्थ तेरस पदाणि। एदेसिं पदाणं मीमांसा परिक्खा जत्थ कीरदि सा पदमीमांसा। उक्कस्सादिचदुण्णं पदाणं पाओग्गजीवपरूवणं जत्थ कीरदि तमणुयोगद्दारं सामित्तं णाम। जत्थ एदेसिं चदुण्णं पदाणं थोवबहुत्तं वुच्चदि तमप्पाबहुगं णाम।

भेद, विशेष और पृथक्त्व, ये एकार्थक शब्द हैं। पद शब्दका निरुक्त्यर्थ है -- 'पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते' जो जाना जाय वह पद है। भेदरूप ही पद भेदपद कहलाता है। यहाँ उत्कृष्ट आदि रूप भेदपदका अधिकार है। उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, ओज, युग्म, ओमविशिष्ट और नोओमविशिष्ट पदके भेदसे यहाँ तेरह पद हैं। इन पदोंकी मीमांसा अर्थात् परीक्षा जिस अधिकारमें की जाती है वह पदमीमांसा अनुयोगद्वार हैं। उत्कृष्ट आदि चार पदोंके योग्य जीवोंकी प्ररूपणा जहाँ की जाती है उसका नाम स्वामित्व अनुयोगद्वार है। जहाँ इन चार पदोंका अल्पबहुत्व कहा जाता है वह अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है।

एदं देसामासियसुत्तं, तेण संखा-गुणयार-ओज-ट्ठाण-जीवसमुदाहारा त्ति पंच अणुयोगद्दाराणि अण्णाणि वत्तव्वाणि भवंति, अण्णहा संपुण्णपरूवणाभावादो। तेण पुव्विल्लेहि सह एत्थ अट्ठ अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। उत्तं च --

यह देशामर्शक सूत्र है, इसलिए यहाँ संख्या, गुणकार, ओज, स्थान और जीवसमुदाहार, ये पाँच अन्य अनुयोगद्वार और वक्तव्य हैं, क्योंकि, इनके विना सम्पूर्ण प्ररूपणा नहीं हो सकती। इसलिए उन पूर्वोक्त तीन अनुयोगद्वारोंके साथ यहाँ आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। कहा भी है --

पदमीमांसा संखा गुणयारो चउत्थयं च सामित्तं।

ओजो अप्पाबहुगं ठाणाणि य जीवसमुदाहारो।।२।।

पदमीमांसा, संख्या, गुणकार, चौथा स्वामित्व, ओज, अल्पबहुत्व, स्थान और जीवसमुदाहार ये आठ अनुयोगद्वार हैं।।२।।

इदि के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? ण ताव ओजअणुयोगद्दारं पुधभूदमत्थि, ओज-जुम्मपरूवणाविणाभाविपदमीमांसाए तस्स पवेसादो (* स प्रतौ 'पदेसादो' इति पाठः।) ण संखाणिओगद्दारो वि अत्थि, उवसंहारपरूवणाविणाभाविसामित्तमत्थि तस्स पवेसादो (* स प्रतौ 'पदेसादो' इति पाठः।) स गुणगाराणिओगद्दारं पि अत्थि, तस्स गुणगाराविणाभाविअप्पाबहुगम्मि पवेसादो ((* स प्रतौ 'पदेसादो' इति पाठः।)। ण ट्ठाणाणियोगद्दारं पि अत्थि, तस्स ट्ठाणपरूवणाविणाभाविअजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वसामित्तम्मि पवेसादो। ण जीवसमुदाहारो वि अत्थि, तस्स वि जीवाविणाभाविचउव्विहदव्वसामित्तम्मि पवेसादो। तम्हा पदमीमांसा सामित्तमप्पाबहुअमिदि तिण्णि चेव अणुयोगद्दाराणि भवंति।

ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता। उसीको आगे स्पष्ट करते हैं -- ओज अनुयोगद्वार तो पृथग्भूत है नहीं, क्योंकि, ओज और युग्म प्ररूपणाकी अविनाभावी पदमीमांसामें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। संख्या अनुयोगद्वार भी पृथक् नहीं है,क्योंकि, उपसंहार प्ररूपणाके अविनाभावी स्वामित्वमें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। गुणकार अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका गुणकारके अविनाभावी अल्पबहुत्वमें अन्तर्भाव हो जाता है। स्थान अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका स्थानप्ररूपणाके अविनाभावी अजघन्य-अनुत्कृष्ट द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व-अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है। जीवसमुदाहार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका भी जीवके अविनाभावी चार प्रकारके द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है। इस कारण पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन ही अनुयोगद्वार हैं; यह सिद्ध होता है।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेदणा दव्वदो किमुक्कस्सा अणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा?।।२।।

पदमीमांसाका प्रकरण है। ज्ञानावरणीय वेदना द्रव्यसे क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है क्या अजघन्य है?।।२।।

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ कायव्वाओ; अण्णहा पुच्छासुत्तस्स असंपुण्णत्तप्पसंगादो। ण च भूदबलिभडारओ महाकम्मपयडिपाहुडपारओ असंपुण्णसुत्तकारओ, कारणाभावादो तम्हा णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा

किण्णोमणोविसिट्ठा त्ति तेरसपदविसयमेदं पुच्छासुत्तं दट्ठव्वं। णाणावरणीयवेयणाए विसेसाभावेण सामण्णरूवाए तेरस पुच्छाओ परूविदाओ। सामण्णं विसेसाविणाभावि त्ति कट्टु एदेणेव सुत्तेण सूचिदाओ तेरसपदपुच्छाओ वत्तइस्सामो। तं जहा --

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, अतः यहाँ अन्य नौ प्रश्न और करने चाहिए; क्योंकि, इनके बिना पृच्छासूत्रकी अपूर्णताका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि इस तरह तो महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके पारगामी भूतबलि भट्टारक असम्पूर्ण सूत्रके कर्ता प्राप्त होते हैं सो बात नहीं है, क्योंकि, उसका कोई कारण नहीं है। इसलिए ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, ओर क्या नो-ओम-नोविशिष्ट है, इस प्रकार तेरह पदविषयक यह पृच्छासूत्र समझना चाहिए। इस प्रकार ज्ञानावरणीयवेदनाके विषयमें विशेषके विना सामान्यरूपसे प्ररूपणा करनेपर तेरह पृच्छाएँ कही गयी हैं। किन्तु सामान विशेषका अविनाभावी होता है, ऐसा समझ करके इसी सूत्रसे सूचित होनेवाली अन्य तेरह पदपृच्छाओंको कहते हैं। वे इस प्रकार हैं --

उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमधुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किण्णोमणोविसट्ठा त्ति बारस पुच्छाओ उक्कस्सपदस्स हवंति। एवं सेसपदाणं पि बारस बारस पुच्छाओ पादेक्कं कायव्वाओ। एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो ।१६९।। तम्हा एदम्हि देसामासियसुत्ते अण्णाणि तेरस सुत्ताणि पविट्ठाणि त्ति दट्ठव्वं।

उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय वेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्यो ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है और क्या नोओम-नोविशिष्ट है, इस परकार बारह पृच्छाएं उत्कृष्ट पदविषयक होती हैं। इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे प्रत्येक पदविषयक बारह बारह पृच्छाएँ करनी चाहिए। यहाँ सब पृच्छाओंका योग एक सौ उनहत्तर होता है ।१६९।। इसी कारण इस देशामर्शक सूत्रमें तेरह सूत्र और प्रविष्ट हैं, ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा।।३।।

उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी , जघन्य भी है और अजघन्य भी है।।३।।

एदं पि देसामासियसुत्तं, तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि। देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो। तत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा -- णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, गुणिदकम्मंसियसत्तमपुढवीणेरइयम्मि भवट्ठिदिचरिमसमए वट्टमाणम्मि उक्कस्सदव्वुवलंभादो। सिया अणुक्कस्सा, कम्मट्ठिदिचरिमसमयगुणिदकम्मंसियं मोत्तूण अण्णत्थ सव्वत्थाणुक्कस्सदव्वुवलंभादो। सिया जहण्णा, खविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमए जहण्णदव्वुवलंभादो। सिया अजहण्णा, सुद्धणयखविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमयं मोत्तूण अण्णत्थ अजहण्णदव्वुवलंभादो। सिया सादिया, उक्कस्सादिपदाणमेगसरूवेण अवट्ठाणाभावादो। कधं दव्वट्ठियणए उक्कस्सादिपदविसेसाणं संभवो? ण, णइकगमे णइगमे सामण्णविसेससंभवं पडि विरोहाभावादो। सिया अणादिया, जीवकम्माणं बंधसामण्णस्स आदित्त(* प्रतिषु 'अदित्त' इति पाठः।)विरोहादो। सिया धुवा, अभविएसु अभवियसमाण(* अ प्रतौ 'समाणाभविएसु' इति पाठः।) च णाणावरणसामण्णस्स वोच्छेदाभावादो। सिया अद्धुवा, केवलिम्हि णाणावरणवोच्छेदुवलंभादो चदुण्णं पदाणं सासदभावेण अवट्ठाणाभावादो वा। सिया जुम्मा। जुम्मं सममिदिएयट्ठो। तं दुविहं कद-बादरजुम्मभेएण। तत्थ जो रासी चदुहि अवहिरिज्जदि सो कदजुम्मो (* चतुष्केण हियमाणश्चतु शेषो हि यो भवेत्। अभावाद् भागशेषस्य संख्यातः कृतयुग्मकः।।१।। x x x चतुष्केण हियमाणस्त्रिशेषस्त्र्योज उच्यते। द्विशेषो द्वापरयुग्मः कल्योजश्चैकशेषकः।।२।। x x x तथा च भगवतीसूत्रे -- गो. । जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से णं कडजुम्मे, एवं तिपज्जवसिए तेओए, दुपज्जवसिए दावरजुम्मे, एगपज्जवसिए कालेओगे" इति। लो. प्र. १२, ७६) जो रासी चदुहि अवहिरिज्जमाणो दोरूवग्गो होदि सो बादरजुम्मं। जो एगग्गो (* प्रतिषु 'योगग्गो' इति पाठः।) सो कलियोजो। जो तिगग्गो सो तेजोजो (* द्रव्यप्रमाण पृ. २४९)। उत्तं च --

यह भी देशामर्शक सूत्र है, इसलिए यहाँ शेष नौ पद कहने चाहिए और देशामर्शक होनेसे ही शेष तेरह सूत्रोंका यहाँ अन्तर्भाव कहना चाहिए। उनमेंसे पहले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणीयवेदना स्यात् उत्कृष्ट है, क्योंकि, भवस्थितिके अन्तिम समयमें वर्तमान गुणितकर्मांशिक सप्तम पृथिवीके नारकीके उत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है। स्यात् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, कर्मस्थितिके अन्तिम समयवर्ती गुणित कर्मांशिक नारकीको छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र अनुत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है। स्यात् जघन्य है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिक

जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य द्रव्य पाया जाता है। स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, शुद्ध नयकी अपेक्षा क्षपितकर्मांशिक जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयको छोड़कर अन्यत्र अजघन्य द्रव्य पाया जाता है। स्यात् सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट आदि पदोंका एक रूपसे अवस्थान नहीं रहता।

शंका -- द्रव्यार्थिक नयमें उत्कृष्ट आदि पदविशेष कैसे सम्भव हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अनेकको विषय करनेवाले नैगम नयमें सामान्य और विशेष दोनों सम्भव हैं, इसमें कोई विरोध नहीं आता।

स्यात् अनादि है, क्योंकि, जीव और कर्मके बन्धसामान्यको सादि माननेमें विरोध आता है। स्यात् ध्रुव है, क्योंकि, अभव्यों और अभव्यसमान भव्योंमें ज्ञानावरणसामान्यका विनाश नहीं होता। स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, केवलीमें ज्ञानावरणका व्युच्छेद पाया जाता है, अथवा उक्त चार पदोंका शाश्वत रूपसे अवस्थान नहीं रहता। स्यात् युग्म है। युग्म और सम ये एकार्थवाचक शब्द हैं। वह कृतयुग्म और बादरयुग्मके भेदसे दो प्रकारका है। उनमेंसे जो राशि चारसे अवहृत होती है वह कृतयुग्म कहलाती है। जिस राशिको चारसे अवहृत करनेपर दो रूप शेष रहते हैं वह बादरयुग्म कहलाती है। जिसको चारसे अवहृत करनेपर एक अश शेष रहता है वह कलिओज राशि है। और जिसको चारसे अवहृत करनेपर तीन अंक शेष रहते हैं व तेजोज राशि है। कहा भी है --

चोद्दस बादरजुम्मं सोलस कदजुम्ममेत्त* कलियोजो।

तेरस तेजोजो खलु पण्णरसेवं खु विण्णेया।।३।।

(* प्रतिषु 'मेत्थ' इति पाठः।)

यहाँ चौदहको बादरयुग्म, सोलहको कृतयुग्म, तेरहको अलिओज और पन्द्रहको तेजोज राशि जानना चाहिए।।३।।

तदो णाणावरणम्हि समदव्वसंभवादो जुम्मत्तं घडदे। सिया ओजा, कत्थ वि तत्थ विसमसंखदव्वुवलंभादो। सिया ओमा, कयाइं परूवणाण(* प्रतिषु 'कयाहं पदेसाणमव-- ' इति पाठः।)मवचयदंसणादो। सिया विसिट्ठा, कयाइं(* प्रतिषु अ प्रतौ 'कदाचि' इति पाठः।) वयादो अहियायदंसणादो। सिया णोमणोविसिट्ठा (* म प्रतौ 'सिया म णोमणोविसिट्ठा' इति पाठः।), पादेक्कं पदावयवे णिरुद्धे वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं पढमसुत्तपरूवणा कदा।१३। ।

इसलिए ज्ञानावरणमें समान द्रव्यकी सम्भावना होनेसे युग्मत्व घटित होता है। स्यात् ओजरूप है, क्योंकि, कहींपर उसमें विषम संख्या युक्त द्रव्य पाया जाता है। स्यात् ओम है, क्योंकि कदाचित् प्रदेशोंका अपचय देखा जाता है। स्यात् विशिष्ट है, क्योंकि, कदाचित् व्ययकी अपेक्षा अधिक आय देखी जाती है। स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, प्रत्येक पदभेदकी विवक्षा होनेपर वृद्धि-हानि नहीं देखी जाती। इस प्रकार प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा की ।१३।।

संपहि बिदियसुत्तत्थो वुच्चदे। तं जहा -- उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खे तस्स अत्थित्तविरोहादो। सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमसेसदव्ववियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो। सिया सादिया, अणुक्कस्सादो उक्कस्सदव्वुप्पत्तीए। सिया अद्धुवा, उक्कस्सपदस्स (*प्रतिषु '-- पदस्स एदस्स', म प्रतौ 'पदस्स पदस्स' इति पाठः।) सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। (सिया) तेजोजो, चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णिरूवावट्ठाणादो। सिया णोमणोविसिट्ठा, वड्ढिहाणीणं तत्थ विरोहादो। एवमुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पंचपदप्पिया ।५। ।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं होती, क्योंकि, अपने प्रतिपक्ष रूपसे उसका अस्तित्व माननेमें विरोध आता है। स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, अजघन्यमें जघन्यसे ऊपरके शेष सब द्रव्यविकल्प सम्मिलित हैं, इसलिए उसमें उत्कृष्ट भी सम्भव है। स्यात् सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट द्रव्यकी उत्पत्ति होती है। स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, यह उत्कृष्ट पद सर्वकाल अवस्थित नहीं रहता। स्यात् तेजोज है, क्योंकि, इसे चारसे अवहृत करनेपर तीन रूप अवस्थित नहीं रहते हैं। स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानि माननेमें विरोध आता है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पाँच पद रूप है ।५। ।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण सेसहेट्ठिमासेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स वि संभवादो। सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णाविणाभावित्तादो। सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीदो अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्सुप्पत्तिदंसणादो च। अणादिया ण होदि, अणुक्कस्सपदविसेसविवक्खादो। अणुक्कस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुक्कस्सपदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो। ण च णिच्चणिगोदेसु वि अणादित्तं लब्भदि, तत्थाणुक्कस्सपदाणं पल्लट्टणेण सादित्तुवलंभादो। सिया

अद्धुवा, अणुक्कस्सेक्कपदविसेसस्स सव्वदा अवट्ठाणाभावादो। सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसम्हि अवट्ठिदविसमसंखुवलंभादो। सिया जुम्मा, कत्थ वि

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना स्यात् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्ट विकल्पको छोड़कर अधस्तन शेष समस्त विकल्परूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है। स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाभावी है। स्यात् सादि है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्टकी उत्पत्ति होती है और अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्तकी उत्पत्ति देखी जाती है। अनादि नहीं है, क्योंकि, यहाँ अनुत्कृष्ट रूप पदविशेषकी विवक्षा है। अनुत्कृष्ट सामान्यकी विवक्षा होनेपर भी अनादि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदके होनेपर सादित्व देखा जाता है। यदि कहा जाय कि इस पदका नित्यनिगोदिया जीवोंमें अनादित्व प्राप्त हो जायेगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, वहाँ अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे यह सादित्व पाया जाता है। स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट रूप एक पदविशेषका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता। स्यात् ओज है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे जितने भेद हैं उनमेंसे किसी भी पदविशेषमें विषम संख्याका सद्भाव पाया जाता है। स्यात् युग्म है,

परिणदा गदी विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससापरिणदा संठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।।२२।।

परिणत स्पर्श, विस्त्रसापरिणत गति, विस्त्रसापरिणत अवगाहना, विस्त्रसापरिणत संस्थान, विस्त्रसापरिणत स्कन्ध, विस्त्रसापरिणत स्कन्धदेश और विस्त्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्त्रसापरिणत जो दूसरे संयुक्त भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।।२२।।

अवट्टिमाणं भवण-विमाण-मेरुकुलसेलादीणं वण्णो पुढवि-आउ-तेउ-वाऊणमकट्टिमवण्णा च विस्ससापरिणदा णाम। वंसादीणं मुत्तिदव्वाणं संघट्टणेण समुट्ठिदा विस्ससापरिणदा सद्दा। कत्थूरि-कंकुमागरु-तमालपत्तादीणं जे साभाविया गंधा ते विस्ससापरिणता गंधा। जंबू-जंबीर-पणसंबादीणं फलाणं पुप्फंकुरादीणं च साभाविया जे रसा ते विस्ससापरिणदा रसा। पउमुप्पलादीणं जे साभाविया फासा ते विस्ससापरिणदा फासा। चंदाइच्चगह-णक्खत्त-ताराणं वाऊणं च जा गदी सा विस्ससापरिणदा गदी। अकिट्टमाणं भवणविमाणाणं जिणहराणं सिद्धखेत्तागासाणं च जा ओगाहणा सा विस्ससापरिणदा ओगाहणा णाम। गंध-रस-फासा जेसु

पुव्वुद्दिदा ते गंध-रस-फासणामकम्मोदयजणिदा त्ति अविवागपच्चइत्तं ण जुज्जदे? जदि एवं तो एदे मोत्तूण पोग्गलाणं जे साभाविया गंध-रस-फासा ते घेत्तव्वा।

अकृत्रिम भवन, विमान, मेरु पर्वत और कुलपर्वत आदिके वर्ण या पृथिवी, जल, अग्नि और वायुके अकृत्रिम वर्ण विस्रसापरिणत वर्ण हैं। बाँस आदि मूर्त द्रव्योंके संघर्षणसे उत्पन्न हुए शब्द विस्रसापरिणत शब्द हैं। कस्तूरी, कुंकुम, अगरु और तमालपत्र आदिकी जो स्वाभाविक गन्ध होती है वह विस्रसापरिणत गन्ध है। जम्बू, जम्बीर, पनस और आदि फलोंके तथा फूल और अंकुर आदिके जो स्वाभाविक रस होते हैं वे विस्रसापरिणत रस हैं। पद्म और उत्पल आदिके जो स्वाभाविक स्पर्श होते हैं वे विस्रसापरिणत स्पर्श हैं। चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओंकी तथा वायुकी जो गति होती है वह विस्रसापरिणत गति है। अकृत्रिम भवन, विमान और जिनघर आदि तथा सिद्धक्षेत्रके आकाशकी जो अवगाहना है वह विस्रसापरिणत अवगाहना है।

शंका -- जिन पदार्थोंमें पूर्वनिर्दिष्ट गन्ध, रस और स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक नहीं बन सकते?

समाधान -- यदि ऐसा है तो इन्हें छोड़कर पुद्‌गलोंके जो स्वाभाविक वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे यहाँपर लेने चाहिए।

चंदाइच्च-गह-णक्खत्त-ताराणं भवण-विमाण-कुलसेलादीणं च जे साभाविया संठाणा ते विस्ससापरिणदा संठाणा। तेसिं तेव चंदाइच्चबिंबादीणं जे खंधा ते विस्ससापरिणदा खंधा। मेहादीणं विस्ससापरिणदखंधाणं जाणि खंधाणि ताणि विस्ससापरिणदा खंधदेसा। मेहिंदहणु-विज्जुचंदक्कादीणं (* अ का प्रत्योः 'विज्जुचंदक्कादीणं', ता प्रतौ 'विज्जुचडक्कादीणं' इति पाठः।) जे अवयवाते विस्ससापरिणदा खंधपदेसा। जे च इमे पुव्वुद्दिट्ठा अण्णे च एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।

चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारकाओंके तथा भवन और कुलाचल आदिके जो स्वाभाविक संस्थान होते हैं वे विस्रसापरिणत संस्थान हैं। उन्हीं चन्द्र-सूर्यके बिम्ब आदिके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्ध होते हैं। स्वभावसे परिणत हुए मेघादिकके स्कन्धोंके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धदेश हैं। मेघ, इन्द्रधनुष्य, बिजली, चन्द्र और सूर्य आदिके जो अवयव होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश हैं। ये पूर्वोक्त और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत और भी जो संयोगको प्राप्त हुए भाव हैं वह सब अविभागप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।

जो सो तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- पओअपरिणदा वण्णा वण्णा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा फासा फासा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा (पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससापरिणदा) पओअपरिणदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससापरिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।।२३।।

जो तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- प्रयोगपरिणत वर्ण और विस्रसापरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द और विस्रसापरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध और विस्रसापरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस और विस्रसापरिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श और विस्रसापरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति और विस्रसापरिणत गति, (प्रयोगपरिणत अवगाहना और विस्रसापरिणत अवगाहना), प्रयोगपरिणत संस्थान और विस्रसापरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध और विस्रसापरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धदेश, प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर प्रयोग और विस्रसापरिणत जितने भी संयुक्तभाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।।२३।।

एदस्स अत्थो वुच्चदे -- पओअपरिणदखंधवण्णेहि विस्ससापरिणदखंधवण्णाणं जो संजोगो सो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम। को एत्थ संबंधो घेप्पदे? संजोगलक्खणो समवायलक्खणो वा। तत्थ संजोगो दुविहो देसपच्चासत्तिकओ गुणपच्चासत्तिकओ चेदि। तत्थ देसपच्चासत्तिकओ णाम दोण्णं दव्वाणमवयवफासं काऊण जमच्छणं सो देसपच्चासत्तिकओ संजोगो। गुणेहि जमण्णोण्णाणुहरणं सो गुणपच्चासत्तकओ संजोगो। समवायसंजोगो सुगमो। एवं सद्द-गंध-रस-फासोगाहण-संठाण-गदि-खंध-खंधदेस-खंधपदेसाणं च जहासंभवं दुसंजोगपरूवणा कायव्वा। सुगमं।

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं --प्रयोगपरिणत स्कन्धोंके वर्णोंके साथ विस्रसापरिणत स्कन्धोंके वर्णोंका जो संयोग होता है वह तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।

शंका -- यहाँ कौनसा सम्बन्ध लिया गया है?

समाधान -- संयोगसम्बन्ध और समवायसम्बन्ध दोनों लिये गये हैं।

संयोग दो प्रकारका है -- देशप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध और गुणप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध। देशप्रत्यासत्तिकृतका अर्थ है दो द्रव्योंके अवयवोंका सम्बन्ध होकर रहना, यह देशप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध है। समवायसम्बन्ध सुगम है।

इसी प्रकार शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, अवगाहना, संस्थान, गति, स्कन्ध, स्कन्धदेश और स्कन्धप्रदेश; इनका यथासम्भव द्विसंयोगी कथन करना चाहिए। यह कथन सुगम है।

जो सो थप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो आगमदो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव।।२४।।

जो द्रव्यबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है -- आगम द्रव्यबन्ध और नोआगम द्रव्यबन्ध।।२४।।

एवं दुविहो चेव दव्वबंधो, अण्णस्सासंभवादो।

इस प्रकार द्रव्यबन्ध दो प्रकारका ही है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है।

जो सो आगमदो (* अ आ का प्रतिषु 'जो णोआगमदो' इति पाठः।) दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं। जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा वणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया अणुवजोगा दव्वे त्ति कट्टु जावदिया अणुवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो णाम।।२५।।

जो आगम द्रव्यबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है -- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथा तथा इनसे लेकर जो अन्य अनुपयोग हैं उनमें द्रव्य निक्षेपरूपसे जितने अनुपयुक्त भाव हैं वह सब आगमद्रव्यबन्ध है।।२५।।

सुगममेदं, बहुसो परूविदत्तादो।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि, इसका अनेक बार कथन कर आये हैं।

विशेषार्थ -- यहाँ आगमके भेद और उनके उपयोगके प्रकार बतलाकर अनुपयुक्त दशामें आगमद्रव्यबन्ध कहा है। आशय यह है कि बन्धविषयक शास्त्रके जितने प्रकारके जानकार हैं

और उनके उपयोग हैं वे सब जब अनुपयुक्त दशामें रहते हैं तब उनकी आगमद्रव्यबन्ध संज्ञा होती है।

जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो -- पओअबंधो चेव विस्ससाबंधो।।२६।।

जो नोआगमद्रव्यबन्ध है वह दो प्रकारका है, प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध।।२६।।

एवं णोआगमदो बंधो दुविहो चेव; अण्णस्सासंभवादो।

इस प्रकार नोआगमद्रव्यबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है।

जो सो पओअबन्धो णाम सो थप्पो।।२७।।

जो प्रयोगबन्ध है वह स्थगित करते हैं।।२७।।

कुदो? बहुवण्णणिज्जत्तादो।

क्योंकि, आगे इसका बहुत वर्णन करना है।

जो सो विस्ससाबंधो णाम सो दुविहो -- सादियविस्ससाबंधो चेव अणादियविस्ससाबंधो चेव।।२८।।

जो विस्रसाबन्ध है वह दो प्रकारका है -- सादिविस्रसाबन्ध और अनादिविस्रसाबन्ध।।२८।।

एवं साहाविहो बंधो दुविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो।

इस प्रकार विस्रसाबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद नहीं पाया जाता।

जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो।।२९।।

जो सादि विस्रसाबन्ध है वह स्थगित करते हैं।।२९।।

कुदो? बहुवण्णणिदो।

क्योंकि, इसका आगे बहुत वर्णन करना है।

जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो -- धम्मत्थिया अधम्मत्थिया आगासत्थिया चेदि।।३०।।

जो अनादिविस्रसाबन्ध है वह तीन प्रकारका है -- धर्मास्तिकायविषयक, अधर्मास्तिकायविषयक और आकाशास्तिकायविषयक।।३०।।

जीवत्थिया पोग्गलत्थिया एत्थ किण्ण परूविदा? ण, तासिं सक्किरियाणं सगमणाणं धम्मत्थियादीहि सह अणादियविस्ससाबंधाभावादो। ण तासिं पदेसबंधो वि अणादियो वइससियो

अत्थि; पोग्गलत्तण्णहाणुववत्तीदो तप्पदेसाणं पि संजोग-विज्जोयसिद्धीए। एक्केक्को दव्वबंधो तिविहो होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

शंका -- यहाँ जीवास्तिक और पुद्गलास्तिकविषयक अनादि विस्त्रसाबन्ध क्यों नहीं कहा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उनकी अपनी गमन आदि क्रियाओंका धर्मास्तिक आदिके साथ अनादिसे स्वाभाविक संयोग नहीं पाया जाता। यदि कहा जाय कि उनका प्रदेशबन्ध तो अनादिसे स्वाभाविक है सो यह बात नहीं है, क्योंकि, यदि ऐसा माना जायगा तो पुद्गलोंमें पुद्गलत्व नहीं बनेगा और पुद्गल तथा जीवोंके प्रदेशोंका भी संयोग और वियोग अनुभव सिद्ध है, अतः इनका अनादि विस्त्रसाबन्ध नहीं कहा है।

विशेषार्थ -- यहाँ धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका अनादि विस्त्रसाबन्ध बतलाया है। प्रश्न यह है कि ऐसा बन्ध पुद्गल और जीवोंका क्यों नहीं कहा? इसका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि एक तो जीव और पुद्गलकी जो गति, स्थिति और अवगाहन क्रिया होती है वह बदलती रहती है। दूसरे, पुद्गलके परमाणुओंका परस्पर बन्ध भी अनादिकालीन नहीं बन सकता है। और तीसरे, पुद्गलों और जीवोंके प्रदेशोंका संयोग और वियोग भी होता रहता है। न तो इन दोनों द्रव्योंका अन्यसे संयोग अनादि और वैस्त्रसिक है और न स्वयं अपने प्रदेशोंका संयोग भी ऐसा है, इसलिए इनके सम्बन्धको अनादि विस्त्रसाबन्धमें सम्मिलित नहीं किया है। माना कि जीवके प्रदेशोंमें विभाग नहीं होता, पर वे सदा धर्मादिक द्रव्योंके समान एक आकारमें स्थिर नहीं रहते, इसलिए इसका भी अनादि विस्त्रसाबन्ध नहीं माना है।

एक एक द्रव्यबन्ध तीन प्रकारका है यह ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा आगासत्थियपदेसा एदासिं (* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ का प्रतिषु 'धम्मत्थिया धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियपदेसा एदासिं' इति पाठः। ता प्रतौ तु 'धम्मत्थियदेसा' आदीनि कोष्ठकान्तर्गतानि सन्ति।)तिण्णं पि अत्थआणमण्णोण्णपदेसबंधो होदि।।३१।।

धर्मास्तिक, धर्मास्तिकदेश और धर्मास्तिकप्रदेश; अधर्मास्ति, अधर्मास्तिकदेश और अधर्मास्तिकप्रदेश तथा आकाशास्तिक, आकाशास्तिकदेश और आकाशास्तिकप्रदेश; इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है।।३१।।